शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2014

हिंदी अनुसन्धान की प्रमुख प्रविधि : व्याख्यात्मक शोध

सुनील कुमार यादव (शोधार्थी)
हिंदी विभाग मानविकी व भाषा संकाय
कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय
गुलबर्गा, कर्नाटक, भारत

शोध संक्षेप

वर्तमान में विभिन्न विश्वविद्यालयों के भाषा व मानविकी संकाय के अंतर्गत हिंदी विभागों में हिंदी साहित्य और भाषा में अनुसन्धान करने के लिए प्रमुख अनुसन्धान.प्रविधि के रूप में व्याख्यात्मक.प्रविधि अधिक प्रचलित है और इसे सर्वाधिक व्यावहारिक तथा सहज माना जाता है। यह क्षेत्र तथ्य की अपेक्षा भाव-विचार को अधिक महत्व देता है रूप को नहीं। साहित्य के भावपक्ष-विचार पक्ष की आलोचनात्मक व्याख्या ही इस प्रकार के शोध कार्य का अभीष्ट है। इस प्राविधि में प्राय: किसी न किसी साहित्येत्तर अनुशाशन का प्रयोग व्यवहृत होता है, जो साहित्य के क्षेत्र में निम्नलिखित होते है- दर्शन, इतिहास, मनोविज्ञान, समाजविज्ञान और मानव विज्ञान। इनमें से साहित्यिक व्याख्या हेतु कौन से अनुशासन का चुनाव किया जाये यह साहित्य के क्षेत्र.विशेष और शोधकर्ता की अभिरुचि पर निर्भर करता है।

शब्द.कुंजी - व्याख्यात्मक शोध.प्रविधि, साहित्येत्तर अनुशासन, अभिरूचि व शोध.प्रकार

प्रस्तावना

आज हिंदी साहित्यिक अनुसन्धान का क्षेत्र पूर्व की अपेक्षा और भी व्यापक रूप लेता जा रहा है। ज्ञान-विज्ञान और तकनीक के विकास ने शोध के नए क्षेत्र खोले हैं। नई-नई शोध प्रविधियां दी हैं। चूँकि शोध की व्याख्यात्मक.प्रविधि मुख्य रूप से साहित्य और दर्शन के क्षेत्र में प्रयुक्त होती रही है, क्योकि साहित्य और दर्शन विचार-भाव का जगत है न कि तथ्यों का। इस प्राविधि के मार्ग को अपनाने वाले शोधकर्ता के समक्ष यह प्रश्न रहता है कि एक कृतिकार किस जीवन दर्शन को अपनी कृति के माध्यम से प्रेषित करना चाहता है और इस प्रश्न का उत्तर शुद्ध तथाकलन नहीं दे सकता वरन इसके हेतु कुशाग्र, तार्किक, तीक्ष्ण, प्रशिक्षित और आलोचनात्मक.दृष्टी का होना अत्यंत आवश्यक है। साहित्येत्तर अनुशासन के प्रयोग की क्षमता अर्थात शोधार्थी की अभिरूचि भी उस क्षेत्र.विशेष में होनी चाहिए। शोध की इस प्रविधि में शोधकर्ता विश्लेषणात्मक.अभिवृत्ति द्वारा शोध.विषय में कृतिगत भावों और विचारों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें आलोचनात्मक.अभिवृत्ति का होना भी अनिवार्य है। सामान्य रूप से इन नवीन व्याख्याओं और प्रतिमानों की प्राप्ति की प्रक्रिया को शोध या अनुसंधान कहा जाये, इस प्रशन में न उलझकर इस तथ्य पर ध्यान केन्द्रित किया जाये कि साहित्य में शोध.प्रविधि के रूप में दो व्याख्यात्मक अनुसंधान किसी न किसी साहित्येत्तर अनुशासन की आधारशिला पर ही प्रवाहमान होता है। वर्तमान में इनमें समाज.विज्ञान मनोविज्ञान और दर्शनशास्त्र में इतना व्यापक व विस्तृत अनुशासन है कि इनका

प्रयोग साहित्यिक.शोध के अतिरिक्त जीवन के किसी भी पक्ष पर किया जा सकता है। परन्तु साहित्यिक शोध में इनकी पूर्ण जानकारी नही अपितु उनकी मूल संधारणाओं तथा प्रविधियो की जानकारी होनी चाहिए। उस विशेष अनुशासन को दृष्टिगत रखते हुए यह भी अभिज्ञान होना आवश्यक है कि उस अनुशासन विशेष की व्याख्यात्मक प्रविधि के रूप में क्या अभीष्ट लक्ष्य है।

व्याख्यात्मक शोध.प्रविधि के विविध अनुशासनों पर आधारित शोध प्रवृत्तियां निम्नलिखत हैं :

1 दार्शनिक व्याख्या शोध.प्रवृत्ति
2 मनोवैज्ञानिक व्याख्यात्मक.शोध
3 साहित्यिक.प्रवृत्तिपरक विशेष व्याख्या
4 सांस्कृतिक व्याख्या प्रवृत्तिए
5 सामाजिक व्याख्या प्रवृत्ति
6 ऐतिहासिक व्याख्या प्रवृत्ति
7 साहित्य.शाश्त्रीय व्याख्या प्रवृत्ति

दार्शनिक व्यखायात्मक शोध

यह दो तरह से किया जाता है - प्रथम दार्शनिक साहित्य की दार्शनिक व्याख्या और सामान्य साहित्य की दार्शनिक व्याख्या परन्तु इसमे यह ध्यातव्य है कि प्रबंध किसी दार्शनिक विषय पर नही बल्कि दार्शनिक साहित्य पर लिखा जा रहा है जिसमे कवि या संत विशेष के काव्यों में किसी दर्शन विशेष के प्रभाव की व्याख्या की जाती है न की किसी दर्शन विशेष के साहित्यिक सिद्धांतों का यथावत विवेचन। भारतीय हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर छायावाद काल तक अधिकतर कवियों ने प्राय: अपनी अनुभूतियों और विचारों को वैदि, उपनिषद, गीता, आरण्यक, ब्राह्मण तथा विभिन्न संप्रदाय जैसे हंस सम्प्रदाय, सगुण-निर्गुण काव्यधारा के अंतर्गत राम-कृष्ण से जुड़े संप्रदाय के दर्शन विशेष के परिप्रेक्ष्य में काव्य.सृजन किया है। अतः प्रबंध का अभीष्ट दार्शनिक कवि के काव्य में दर्शन के तत्वों का अन्वेषण करना होना चाहिए न कि उसके काव्य की दार्शनिक व्याख्या। जैसे.संत साहित्य का दार्शनिक अध्ययन, कबीर के बीजक की दार्शनिक व्याख्या, हिंदी निर्गुण कविता पर वेदांत का प्रभाव, प्रसाद का सौन्दर्य दर्शन, छायावादी काव्य के दार्शनिक एवं सांस्कृतिक पक्षों का अनुशीलन आदि।

मनो.विश्लेषणात्मक व्याख्या

इस व्याख्या में भी दो प्रमुख.पद्धतिया हैं- प्रथम सामान्य मनोवैज्ञानिक शोध जिसमें कवि या लेखक के मन:स्थितियों का निरूपण करना, विषय.वस्तु का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना, व्यक्ति के चेतन-अवचेतन और अचेतन मन पर सामाजिक जीवन.शैली के अंतर:क्रियात्मक रूप से पड़े उसके स्वभाव की परिवर्तनीय क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करना होता है। जैसे.निराला काव्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, आधुनिक हिंदी कविता का मनोवैज्ञानिक अध्ययन। और दूसरे मार्ग.में किसी मनो.वैज्ञानिक सिद्धांत को किसी साहित्य.रूप विशेष में अन्वेषित किया जाता है। जैसे. हिंदी उपन्यासों का मनो.विश्लेषणात्मक अध्ययन।

व्याख्यात्मक शोध

इसमें साहित्य में आदिकाल से आधुनिक काल तक कई साहित्यिक प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं, जैसे आदर्शवाद यथार्थवाद, छायावाद, प्रगति-प्रयोगवाद, रहस्यवाद, कविता सपाटबयानी का युग.विशेष। इस प्रकार के शोध.कार्य में अभीष्ट प्रवृत्ति का विकास, उसके तत्वों का आख्यान रहता है, जिसे बाद में निश्चित किया जाता है कि

साहित्य की कौन-सी धारा इससे प्रभावित हुई। कथ्य व शिल्प में इसका विकास कहाँ तक हुआ है। जैसे.आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यक्तिवादी प्रवृत्तियां आदि।

सांस्कृतिक व्याख्यात्मक शोध

इसके अंतर्गत जिस प्रकार ऐतिहासिक लेखन में ऐतिहासिक सामग्री का उपयोग किया जाता है, उसी प्रकार साहित्य के सांस्कृतिक शोध में साहित्यिक सामग्री के आधार पर किसी संस्कृति विशेष का इतिहास, विकास और प्रभाव का तथ्यान्वेषण किया जाता है। साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, कवि या काव्य के युग विशेष का सांस्कृतिक विश्लेषण किया जाता है। इस प्रकार के शोध का लक्ष्य मुख्यत: कृति धारा का सांस्कृतिक मूल्यांकन ही करना होता है। यह सांस्कृतिक मूल्यांकन संस्कृति को साध्य मानकर;साहित्य के माध्यम से संस्कृति का विवरणात्मक विकासात्मक अध्ययन या साहित्य को साध्य मानकर;सामाजिक पर्यावरण प्रवृत्ति व्यक्तित्व-कृतित्व का अध्ययन किया जाता है। जैसे.जायसी काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन, प्रेमचंद के कथा-साहित्य में समसामयिक संस्कृति का निरूपण आदि। साहित्य की

समाजशास्त्रीय व्याख्यात्मक शोध

इस प्रकार के शोध कार्य में सामाजिक तत्वों को किसी कवि कृतिकार की कृति में लक्षित करना या समाज.विज्ञान के सिद्धांतों का व्यवहार कर उस साहित्य की व्याख्या की जाती है। इस प्रकार का शोध.कार्य तीन धाराओं में चलता है. 1 साहित्य में समाज की खोज 2 समाज में साहित्य की सत्ता और साहित्यकार की स्थिति का विवेचन 3 साहित्य और पाठक के सम्बन्ध का विवेचन। इसमें सामाजिक इतिहास के किसी मोड़ विशेष के प्रभाव को भी साहित्य में लक्षित किया जा सकता है। जैसे. संत काव्य का सामाजिक पक्ष, तुलसी का समाज दर्शन, दादू.पंथी काव्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, प्रेमचंद के उपन्यासों में मध्यवर्ग आदि।

ऐतिहासिक व्याख्यात्मक शोध.

इसमें प्रथम प्रबंध के प्रकार में ऐतिहासिक परिस्थितियों का एक युग विशेष के साहित्य पर हुए प्रभाव का निरूपण करते हैं। और दूसरे प्रकार में ऐतिहासिक.विशलेषण अर्थात ऐतिहासिक कहानियाँ, नाटक, उपन्यास आदि से युक्त विधाओं का ऐतिहासिक दृष्टि से मूल्यांकन करते हैं, क्योकि यह मुख्यत: इतिहास से विषय.वस्तु लेकर अपना सृजन करती है। जैसे प्रसाद के नाटक, वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास आदि। इस व्याख्यात्मक प्रवृत्ति का अभीष्ट एक युग या काल के साहित्य साहित्यिक विधा को उसके विशेष ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखकर शोध कार्य किया जाता है। और इस आधार पर अनुसंधेय साहित्य के वैचारिक पक्ष का ही अनुशीलन किया जाता है। जैसे.इतिहास के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यास, उन्नीसवीं शती के राष्ट्रीय जागरण का तत्कालीन हिंदी साहित्य पर प्रभाव आदि। व्याख्यात्मक शोध की साहित्य.शास्त्रीय पद्धति के अंतर्गत साहित्यिक धाराओं-विधाओं पर साहित्य की रचना प्रक्रिया रूप विधान काव्य.नियमन के सिद्धांतो के प्रकाश में विवेचन-विश्लेषण किया जाता है। इसमे भारतीय काव्यशास्त्रीय सिद्धांत जैसे अलंकर, वक्रोक्ति, ध्वनि, रीती, औचित्य आदि सिद्धांत तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय सिद्धांतो जैसे प्रतीकवाद, कलावाद, बिम्बवाद आदि के आलोक में और नयी प्रवृत्तियों में भाव.विभाव अनुभाव या

अलंकार विशेष के सन्दर्भ में व काव्य गुण, काव्य दोष आदि के परिप्रेक्ष्य में शोध कार्य किया जाता है। जैसे. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन, आधुनिक हिंदी कविता में ध्वनि, वक्रोक्ति सिद्धांत और छायावाद, तुलसी साहित्य में अलंकर योजना, छायावाद में कल्पना.तत्व, लक्षणा और उसका प्रसार, रस सिद्धांत का सामाजिक मूल्याङ्कन, रीतिकालीन लक्षण ग्रंथों में भाषा भूषण का स्थान आदि।

निष्कर्ष.

उपर्युक्त विवेचन के उपरांत यह कहा जा सकता है कि साहित्यिक.विधाओं.विशेष में जबकि जहां तथ्यों की अपेक्षा विचारात्मक.आलोचनात्मक दृष्टी से साहित्यिक शोध में नये प्रतिमानों और व्याख्याओं को परिभाषित.प्रतिपोषित किया जाता है। ऐसे शोध.प्रबंध लेखन में व्याख्यात्मक.शोध प्रवृत्ति अधिक मूल्य व महत्व रखती है। इसीलिए वर्तमान में अधिकांशत: हिंदी.साहित्यिक शोध कार्य इसी प्रविधि के द्वारा किये जा रहे है। बस आवश्यक यही है कि इस प्रविधि का आधार कोई न कोई साहित्येत्तर अनुशासन होता है, जिसकी मूलभूत अवधारणाओं व प्रविधियों से शोधार्थी को पूर्णतर: परिचित होना चाहिए और विषय.निर्धारण में सावधानी बरतनी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 सिंह ए उदयभानु, द्विवेदी हजारी प्रसाद, अनुसन्धान की प्रक्रिया

2 डॉ.मनमोहन सहगल, हिंदी शोध तंत्र की रूपरेखा, पंचशील प्रकाशन जयपुर

3 सिंह विजयपाल, हिंदी.अनुसन्धान, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्लीए 2007

4 शर्मा विनयमोहन, शोध.प्रविधि, नेशनल पब्लीकेशंस हाउस दिल्ली 1963

5 सिंघल वैजनाथ, शोध.स्वरूप और मानक व्यावहारिक कार्यविधि, वाणी प्रकाशन 1994

6 पाण्डेय मैनेजर, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला 2006

7 बोरा राजकमल, अनुसन्धान.प्रविधि और क्षेत्र, राधाकृषण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006

8 जैन रविन्द्र कुमार, साहित्यिक अनुसन्धान के आयाम, प्रकाशन संसथान, नई दिल्लीए 2008